कविता

अच्छे दिन के लिए खदेड़ा गया

– बर्तोल्त ब्रेख्त

खाते-पीते घर के बच्चों की तरह
मेरा लालन-पालन हुआ
मेरे मां-बाप ने मेरे गले में
एक कॉलर बांधा और
खूब टहल-खिदमत करते हुए
मुझे पाला-पोसा और बड़ा किया
उन्होंने मुझे ऐसी शिक्षा दी ताकि
मैं दूसरों पर उन के हुक्म व रौब
गालिब कर सकूं
लेकिन मैं जब सयाना हुआ
और अपना अड़ोस-पड़ोस देखा तो
अपने खेमे के लोग मुझे कतई
नहीं भाये
न मुझे हुक्म देना भाता
न अपनी खिदमत
सो अपने खेमे के
लोग़ों से नाता तोड़कर
मैं तुच्छ श्रेणी के लोग़ों
के बीच जा बैठा
इस प्रकार
उन्होंने एक विश्वासघाती
को पाला-पोसा
अपनी सभी चालें उसे सिखाई और
उसने वे सारे भेद दुश्मन
को जाकर खोल दिये।
हां मैं उनके भेद खोलकर रख देता हूं
मैं लोग़ों के बीच जाकर उनकी
ठगी का पर्दाफाश कर देता हूं
मैं पहले ही बता आता हूं
कि आगे क्या होगा, क्योंकि मैं
उनकी योजनाओं की अन्दरूनी
जानकारी रखता हूं
उनके भ्रष्ट पंडितों की संस्कृत
मैं बदल डालता हूं शब्द-ब-शब्द
आम बोलचाल में और वह
दिखने लगती है साफ़-साफ़ गप्प-गीता।
इंसाफ़ के तराजुओं पर
वे कैसे डंडी मारते हैं
यह पोल भी मैं खोल देता हूं।
और उनके मुखबिर बता आते हैं उन्हें
कि मैं ऐसे मौकों पर
बेदखल लोगों के बीच
बैठता हूं, बज वे बगावत
की योजना बना रहे होते हैं।
उन्होंने मेरे लिए चेतावनी भेजी
और मैंने जो कुछ भी जोड़ा था
अपनी मेहनत से वह छीन लिया
इस पर भी मैं जब बाज न आया
वे मुझे पकड़ने के लिए आए
हालांकि उन्हें मेरे घर पर कुछ भी
नहीं मिला सिवाय उन पर्चों के
जिनमें जनता के खिलाफ़
उनकी काली करतूतों का खुलासा था
सो, चटपट उन्होंने मेरे खिलाफ़
एक वारंट जारी किया
जिसमें आरोप था कि मैं तुच्छ
विचारों का हूं यानी तुच्छ
लोग़ों का तुच्छ विचार।
मैं जहां कहीं जाता
धनकुबेरों की आंख का कांटा
सिद्ध होता, लेकिन जो खाली होते
वे मेरे खिलाफ़ जारी वारंट पढ़कर
मुझे यह कहते हुए
छुपने की जगह देते कि
''तुम्हें एक अच्छे कारण
के लिए खदेड़ा गया है।''

भाजपा की पाठशाला

भाजपा की जीत के बाद उसके वादों और इरादों को लेकर बहुतेरे सवाल उठे, ऐसा किसी भी नई सरकार के बनने के बाद होता है। जहां तक सवाल है सरकार के कामकाज का तो एक महीने में उसका आकलन करना थोड़ी जल्दबाज़ी होगी पर उसके नीति-नियंताओं द्वारा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का 'मंत्रोचार' और 'कार्यसंस्कृति' नीतिगत बदलाव के स्पष्ट संकेत दे रही है। पी एम के दस मंत्र हों या फ़िर देशहित में कड़े फ़ैसले लेने की जरूरत जिसे वह व्यापक देशहित में जरुरी मानते हैं, के व्यापक निहितार्थ हैं। क्योंकि इस जीत के बाद कहा गया कि 1947 में देश ने राजनीतिक आज़ादी हासिल की थी और मई 2014 में उसने अपनी 'गरिमा' हासिल की है तो वहीं सूरज कुंड में भाजपा सांसदों की दो दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षण देते हुए संघ के सरकार्यवाहक सुरेश सोनी 'राष्ट्रवाद' की भावना से इतना 'ओत-प्रोत' हो गए कि उन्होंने मोदी सरकार बनने की तुलना स्वतंत्रता दिवस से कर डाली। गौरतलब है कि सोनी इन दिनों मध्य प्रदेश के व्यापमं घोटले के आरोपों के चलते चर्चा में हैं। दरअसल, मंत्रियों और सांसदों की लगातार पाठशाला तो लगाई जा रही है पर सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी मंत्रियों को सौ दिन का एजेंडा पेश करने को कहा था, एक महीने से भी अधिक समय बीत जाने के बाद भी जो पेश नहीं हो सका। मोदी खुद को एक 'धीर-गंभीर' व्यक्ति के रुप में पेश करने की असफल कोशिश कर रहे हैं। मोदी को जिस मतदाता वर्ग ने चुना है वह इतना धीर-गंभीर नहीं है और न ही वह इस 'गम्भीरता' को ज्यादा समय तक पचा पायेगा। यही डर मोदी सरकार को सता रहा है। सारी 'राष्ट्रवादी' मुद्राएं इसी डर का परिणाम हैं।

शायद, यही वह दबाव था जिसने नरेन्द्र मोदी को उनकी सरकार के एक महीने पूरे होने पर 'अंग्रेजी में' ब्लाग लिखने को मजबूर किया। जिसमें उन्होंने लिखा है कि हर नई सरकार के लिए मीडिया के दोस्त हनीमून पीरियड का इस्तेमाल करते हैं। बीती सरकारों को यह छूट थी कि वह इस हनीमून पीरियड को सौ दिन या उससे भी ज्यादा आगे तक बढा सकें। यह अप्रत्याशित नहीं है कि मुझे ऐसी कोई छूट नहीं है। सौ दिन भूल जाइए सौ घंटे के अंदर ही आरोपों का दौर शुरू हो गया। जिस तरह मोदी ने मीडिया द्वारा उनको छूट न देने की बात कही है, उससे जाहिर है कि यह दबाव किसी राजनीतिक पार्टी से नहीं बल्कि इस दौर के उन्हीं मीडिया-सोशल मीडिया जैसे संचार माध्यमों से है, जिसने एक महीने पहले ही घोषित किया था, 'मोदी आ रहा है'। ऐसे में मीडिया की यह बेरुखी उन्हें भा नहीं रही है। मोदी समझ रहे हैं कि इसे सिर्फ़ यह कह कर कि 'मैं आया नहीं, मुझे गंगा मां ने बुलाया है', 'मैं चाय बेचने वाला हूं' या 'नीच जाति का हूं' नहीं 'मैनेज' किया जा सकता।

नरेन्द्र मोदी चुनाव के दौरान जब सब्र की सीमाओं को तोड़ते हुए कहते थे कि 'मितरों' देश अब इंतजार नहीं कर सकता तो ऐसे में उनके द्वारा वक्त की मांग करना बेमानी होगा, क्योंकि रेल, तेल-गैस जैसे मंहगाई बढ़ाने के मुद्दों पर ठीक इसी तरह पूर्ववर्ती सरकार के भी तर्क रहते थे, जिस पर संसद को भाजपा ठप्प कर देती थी। अपने मंत्रालयों में मोटिवेशन के लिए शिव खेड़ा जैसे 'प्रेरक वक्ता' और उन्हीं के जैसे कुछ और जो कहते हैं कि जो व्यवहार तुम्हें खुद के लिए अच्छा न लगे उसे दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए, से भाजपा को सीख लेने की जरूरत है।

मोदी सरकार द्वारा लगातार आम जनता को दी जा रही कड़वी घूंट को जनता संघ परिवार के किसी 'वैद्य जी' द्वारा दी जा रही औषधि मान कर चुप नहीं हो जाएगी। इसीलिए भाजपा सांसदों को प्रजैण्ट प्राइम मिनिस्टर के बाद 'वेटिंग प्राइम मिनिस्टर' लालकृष्ण आडवाणी ने गुर सिखाते हुए कहा कि हमें जनता को यह बताना होगा कि ऐसे निर्णय क्यों जरूरी हैं और वे कैसे देश तथा आम जनता को दीर्घकालिन लाभ पहुंचाएंगे। बहरहाल, कोई भी नई सरकार सबसे पहले आम जनता को फ़ौरी राहत देती है, जिसके बतौर मौजूदा सरकार ने रेल किराया बढ़ा दिया। यह वही मोदी हैं, जिन्होंने पिछली सरकार द्वारा बजट से पहले रेल किराया बढ़ाने पर संसद की सर्वोच्चता जैसे सवालों को उठाया था, जिसे वह अपनी सरकार में भूल गए। शायद अब उनके लिए संसद की सर्वोच्चता जैसा अहम मुद्दा, मुद्दा नहीं रह गया। इसीलिए वह बड़े मार्मिक भाव से कहते हैं कि जब कोई राष्ट्र के सेवा करने के एकमात्र उद्देश्य से काम कर रहा हो तो इस सबसे फ़र्क नहीं पड़ता। यही वजह है कि मैं काम करता रहता हूं और उसी से मुझे संतुष्टि मिलती है। पर नरेन्द्र मोदी को यह समझना चाहिए कि यह उनका कोई निजी मुद्दा नहीं है, जिसमें उन्हें जिस कार्य में संतुष्टि मिलेगी वे वह करेंगे।

विदेशी काला धन हो या फिर, 'अच्छे दिन' यह चुटकुला बन गया है। अगर मोदी सरकार सचमुच काला धन सामने लाना चाहती है तो उसके लिए उसे 'स्विस' से गुहार करने के पहले देश के भीतर के काले धन को जब्त करना चाहिए। पर जो भाजपा मध्य प्रदेश में व्यापमं जैसे घोटालों के आरोपों से घिरी हो, उससे ऐसा उम्मीद करना खुद को धोखा देना होगा।

जो भी हो पर राजनीतिक हलकों में यह चर्चा-ए-आम है कि सूरज कुंड में भाजपा सांसदों की पाठशाला में व्यपमं घोटाले को लेकर चर्चा में रहे सुरेश सोनी ने सांसदों को क्या गुर दिए। बंगारु लक्ष्मण प्रकरण से सीख लेते हुए जिस तरह सरकार बनने के बाद सांसदों को स्टिंग ऑपरेशन से बचने की नसीहत दी जा रही है और पिछले दिनों केन्द्रीय मंत्री संजय बालियान ने अपने कार्यालय में पेन-कैमरा लाना वर्जित किया है, उससे साफ़ जाहिर है कि भाजपा को अपने सांसदों की नैतिकता पर पूरा संदेह है। जिस तरीके से भाजपा सांसदों को सार्वजनिक वक्तव्य देने से रोका गया है, इस बात का आंकलन करना कठिन न होगा कि जो सांसद अपने लोकतांत्रिक अधिकार को नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं वह जनता के अधिकारों को कितनी आवाज दे पाएंगे।

-राजीव यादव

मज़दूरों की एकता को देखकर मैनेजमेंट झुका

फ़रीदाबाद (नागरिक) थर्माडाइन, प्रा.लि. सेक्टर 27 मथुरा रोड फ़रीदाबाद में स्थित है। इस कम्पनी में एअर फिल्टर हवा साफ़ करने वाला यंत्र व एअर सावर जो अस्पताल व मेडिकल कम्पनी के लिए बनाया जाता है जिसका कार्य शरीर को कीटाणु रहित करना व धूल मिट्टी साफ़ करना (तेज हवा प्रेशर से) होता है इस कम्पनी में 200 मज़दूर कार्यरत हैं। जिसमें स्थायी मज़दूर (परमानेन्ट) 15 के लगभग हैं इसके आधे महिला मज़दूर स्थायी हैं। बाकी 25 मज़दूर व 100 से ऊपर महिला मज़दूर ठेकेदारी में काम करती हैं। ठेकेदारी के मज़दूरों को न्यूनतम हरियाणा ग्रेड 5548 रुपये दिया जाता है। सिंगल ओवर टाइम दिया जाता है।

प्रोडक्शन मैनेजर की तरफ़ से मज़दूरों को लोडिंग अनलोडिंग करवाना व एक सेक्सन से दूसरे सैक्शन में भेजना जारी रहता है। अगर कोई मज़दूर जाने से मना करता है तो कहता है कि ''हेल्पर हो हम जहां कहेंगे वहां काम करना पड़ेगा''। एक चैनल विभाग है जहां फिल्टर के लिए चैनल तैयार किया जाता है। जो हाथ से एसेम्बल किया जाता है। प्रोडक्सन मैनेजर जिन्हें सरदार जी कहते हैं, कई बार चैनल विभाग में आकर मज़दूरों की मीटिंग लेकर समझाना व दबाव के रूप में समझाते हैं लेकिन जब मज़दूर सवाल जवाब करते हैं तो चुप्पी साध लेते हैं। जब मज़दूर कहते हैं कि उन्हें दो साल हो गये तनख्वाह बढ़ाई जाये। उन्हें मिलता क्या है तब वे चुप हो जाते हैं। दूसरे विभाग में काम करने पर मज़दूरों ने कहा कि वे दूसरे विभाग में काम करने नहीं जायेंगे। एक दो मज़दूर तो इस्तीफ़ा लिखने लगे तो उन्हें मना कर दिया। लेकिन कई बार डिपार्ट में आकर समझाना व फोरमैन का दबाव देना जारी रहा।

एक मज़दूर से मैनेजर ने बोला, ''बेटा थोड़ा छत के ऊपर पानी की टंकी साफ़ कर देना''। मज़दूर गुस्से में आकर बोला कि वह साफ़ नहीं करेगा। यह उसका काम नहीं है। इसके बाद मज़दूर को फैक्टरी गेट पर बैठा दिया गया। इस पर सभी चैनल विभाग के मज़दूरों ने काम बंद कर दिया। उसके बाद दो-तीन मज़दूरों को मैनेजर के केबिन में बुलाया गया। मज़दूर अपनी सही बात पर अड़े रहे और कहा कि हमारा काम नहीं है कि आप जो मरजी वह करवाने लगो। सुबह 8:30 बजे से 10:00 बजे तक काम बंद रखा। ये मामला सारे विभागों में फैल गया। हर मज़दूर जानने-समझने के लिए चैनल विभाग में आने लगे। मैनेजर ने धमकी दी कि सबको बाहर कर दिया जायेगा। मज़दूर विभाग से बाहर गेट की तरफ जाने लगे तो रोका गया। टी एरिया में बैठने को बोला गया मज़दूर खड़े रहे, हमारा साथी जब तक नहीं आयेगा तब तक काम नहीं करेंगे। फ़िर डिपार्ट में जाकर बैठ गये। मैनेजर ने एकता देखकर मज़दूर को वापस बुलाया। उसके बाद सभी मज़दूर काम में लग गये। मज़दूरों की एकता के दम पर मैनेजमेंट को पीछे हटने पर मजबूर किया।

फैक्टरी मालिक व मैनेजमेंट द्वारा अकूत शोषण जारी है। यहां कोई भी श्रम कानून लागू नहीं होता है। यहां तक कि स्थायी मज़दूरों की तनख्वाह 6000 से 9000 रुपये तक भी है। ठेकेदारी के मज़दूरों को हरियाणा ग्रेड दिया जाता है जो एक साल, दो साल, चार साल से काम कर रहे हैं। ये मज़दूर 10 वीं व आईटीआई हैं इन्हें न तो ई.एस.आई., पे स्लिप व पी. एफ. स्लिप दिया जाता है। हर साल करोड़ों का मुनाफ़ा होता है। लेकिन मज़दूरों की तनख्वाह में कोई बढोत्तरी नहीं, इतने सालों से काम करने के बाद भी स्थायी नहीं किया गया। सवाल ये है कि अपना हक अधिकार जैसे-स्थायी नौकरी, पी.एफ़, ई.एस.आई. अच्छी तनख्वाह हासिल करने के लिए आज जरूरत है कि स्थायी व ठेका मज़दूरों को एकता बनानी पड़ेगी। तब जाकर यह सब मिलेगा। आज फ़रीदाबाद में किसी भी फैक्टरी में श्रम कानून लागू नहीं है। श्रम न्यायालय व पूंजीपति एक होकर मज़दूरों का खून पसीना निचोड़ रहे हैं। ये ही हालात देश भर के मज़दूरों के साथ में हैं।

आज जरूरत है कि व्यापक एकता बनाकर पूंजीपतियों व पूंजीवादी सरकार से लड़ा जाए तभी हमें अपना हक अधिकार हासिल होगा।

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्ककरें।